इस्लामी भाईचारा

33

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है। सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं। हम उसी का शुक्र अदा करते हैं और उसी से मदद और माफ़ी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि पर। व बअद!

तमाम मुसलमान भाई–भाई हैं, आपस में दोस्त हैं। एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं और आपस मे हमदर्दी रखते हैं। क्योंकि इर्शादे बारी तआला है–

(1) "सारे ईमान वाले (मोमिन) आपस में भाई–भाई हैं।" (हुजरात–आयत–10)

(2) "मोमिन मर्द और मोमिना औरतें एक–दूसरे के दोस्त होते हैं। नेकी का हुक्म देते और बुराई से मना करते हैं। नमाज़ कायम करते, ज़कात अदा करते और अल्लाह की और उसके रसूल (सल्ल.) की इताअत करते हैं। यही वोह लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक! अल्लाह गालिब और हिक्मतों वाला है।"(तौबा–आयत–71)

अल्लाह के रसूल सल्ल. ने तमाम मोमिनों को एक जिस्म की तरह करार देते हुए इर्शाद फरमाया "मोमिनो की मिसाल आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने, एक–दूसरे पर तरस खाने और एक–दूसरे पर शफक्कत करने में एक जिस्म की तरह है कि जब उसका एक हिस्सा बीमार होता है तो सारा जिस्म उसके लिए बुखार के साथ तड़प उठता है और उसकी वजह से बेदार रहता है।" (बुखारी–6011, मुस्लिम–2586)

इस्लामी भाई चारा अल्लाह की नैअमत है– "तुम सब अल्लाह की रस्सी को मजबूती से थाम लो और फिरक़ों में मत बंटो और अपने ऊपर अल्लाह की नैमत को याद करो जब तुम एक–दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में मुहब्बत पैदा कर दी और तुम अल्लाह के फज़्ल से भाई–भाई बन गये।" (आले इमरान–आयत–103)

"अल्लाह ने मोमिनों के दिलों में मुहब्बत पैदा की। अगर आप (सल्ल.) ज़मीन पर मौजूद सब चीज़े खर्च कर डालते। फिर भी उनके दिलों में मुहब्बत पैदा नही कर सकते थे। लेकिन अल्लाह ने उनमें मुहब्बत पैदा कर दी।" (अनफाल – आयत–63) इस आयते करीमा के नुजूल का सबब यह है कि नबी सल्ल. के रसूल बनाये जाने से पहले अरब लोगो में क़बाइली जंगें हुआ करती थीं। जो कई सालो तक जारी रहती थीं। लोग एक–दूसरे के खून के प्यासे होते थे। किसी कबीले का एक शख्स मारा जाता तो उसके बदले में कई बेगुनाहों को मार दिया जाता। मदीना (यसरिब) में रहने वाले दो कबीलों औस और ख़जरज के बीच भी ऐसी ही जंगें होती रहती थीं। जब इस्लाम आया तो इस दीन को कुबूल करने वाले कई कबीलों में अल्लाह ने उल्फत और मुहब्बत पैदा कर दी और सब मुसलमानों को एक–दूसरे का भाई बना दिया। फिर वह लोग जो कल तक एक–दूसरे के दुश्मन थे अब अपने भाईयों की ज़रुरतों पर अपनी ज़रुरतों को कुर्बान करने लगे।

मुसलमानों के आपसी हुकूक़–

(1) एक–दूसरे से मुहब्बत करना– अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया–

(क) "तुम जन्नत में दाखिल न होगे यहां तक कि ईमान ले आओ और तुम ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक एक–दूसरे से मुहब्बत न करने लगो। क्या मैं तुम्हें वह काम न बताऊं कि जिस के करने से तुम एक–दूसरे से मुहब्बत करने लगो? तुम अपने बीच सलाम को फैलाओ। (यानि हर मुसलमान को सलाम कहा करो)" (मुस्लिम–054)

(ख) और फरमाया "तुम एक–दूसरे से मुसाफेहा किया करो। इससे तुम्हारे बीच बुगज़ और कीना खत्म हो जायेगा। एक–दूसरे को हदया दिया करो। इससे तुम आपस में मुहब्बत करने लगोगे और तुम्हारे बीच दुश्मनी खत्म हो जायेगी।" (मौत्ता मालिक–1682)

(ग) अबु इदरीस खौलानी रह. का बयान है कि मैंने मआज़ बिन जबल रज़ि. से कहा कि मैं आप से अल्लाह की रज़ा के लिये मुहब्बत करता हुँ। उन्होंने कहा वाकई अल्लाह के लिए?मैं बोला जी हां सिर्फ अल्लाह के लिए। तो उन्होंने कहा– तुम्हें खुशखबरी हो क्योंकि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल. को फरमाते हुऐ सुना ''अल्लाह तआला फरमाता है मेरी मुहब्बत उन लोगो के लिए वाजिब हो जाती है जो मेरी रज़ा के लिए आपस में मुहब्बत करते, साथ में मिल बैठते, एक दूसरे की ज़ियारत करते और एक–दूसरे पर खर्च करते हैं।'' (सही तर्गीब व तरहीब–अलबानी–3018)

(घ) ''एक शख्स अपने (दीनी) भाई से मिलने के लिए उसकी बस्ती की तरफ रवाना हुआ तो अल्लाह ने उसके रास्ते में एक फरिश्ता मुकर्रर कर दिया। जब वह उसके पास से गुज़रा तो फरिश्ते ने कहा– कहाँ जा रहे हो? वह बोला– इस बस्ती में मेरा एक भाई है। उससे मिलने जा रहा हुँ। फरिश्ते ने पूछा– क्या वह तुम्हारा एहसानमन्द है? वह बोला– नहीं। मैं तो सिर्फ इसलिए जा रहा हुँ कि उससे मुझे सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए मुहब्बत है। तब फरिश्ते ने कहा– मुझे अल्लाह ने तुम्हारी तरफ यह पैगाम देकर भेजा है कि जिस तरह तूने उस शख्स से सिर्फ अल्लाह के लिए मुहब्बत की है उसी तरह अल्लाह ने भी तुझसे मुहब्बत कर ली है।'' (मुस्लिम–2567)

(च) ''तीन बातें अगर किसी शख्स में मौजूद हों तो वह उनके ज़रिये ईमान की लज्जत और मिठास पा लेता है। (1) अल्लाह और उसके रसूल सल्ल. के साथ सबसे ज्यादा मुहब्बत हो। (2) किसी शख्स से मुहब्बत हो तो सिर्फ अल्लाह की रज़ा के लिए हो। (3) उसे कुफ्र की तरफ लौटना उसी तरह ना पसन्द हो जैसा कि जहन्नम में डाला जाना उसे नापसन्द है।'' (बुखारी–16, तिर्मिज़ी–2412, मुस्लिम–53)

(छ) ''बेशक! कयामत के दिन अल्लाह तआला इर्शाद फरमाएगा– मेरी खातिर मुहब्बत करने वाले आज कहां हैं? मैं उन्हें अपने साये में जगह देता हुँ। जबकि आज मेरे साये के अलावा और कोई साया नहीं।'' (मुस्लिम–2566)

(ज) एक शख्स ने पास से गुजरने वाले शख्स के बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल. से कहा कि मुझे इस आदमी से अल्लाह की रज़ा के लिये मुहब्बत है। आप सल्ल. ने फरमाया ''जाओ और उसे यह बात बता कर आओ। इससे तुम्हारे माबैन मुहब्बत ज्यादा देर तक कायम रहेगी।'' (अबुदाऊद–5125–हसन)

(2) एक–दूसरे से हमदर्दी करना– अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि. जब हिजरत करके मदीना आए तो अल्लाह के रसूल सल्ल. ने सअद बिन रबीअ अन्सारी रज़ि. से आपका भाई–चारा करा दिया। सअद बहुत मालदार थे। उन्होंने इब्ने औफ रज़ि. से कहा– मैं अन्सार में सबसे ज्यादा मालदार हुँ। मैं अपने माल के दो हिस्से करता हुँ। एक हिस्सा मेरे लिये और दूसरा आपके लिए। इसके अलावा मेरी दो बीवियां भी हैं। आपको उन दोंनों में से जो ज्यादा अच्छी लगे मैं उसे तलाक दे दूंगा और जब इद्दत पूरी हो जाऐ तो आप उससे शादी कर लें। इब्ने औफ रज़ि. ने कहा– अल्लाह आप के घर वालों और माल में बरकत दे। मुझे बाज़ार बता दीजिए– इसके बाद वह कुछ घी और पनीर के मालिक हो गये और कुछ ही अरसे बाद आपने एक अन्सारी औरत से शादी कर ली। इस पर आप सल्ल. ने उन्हें मुबारकबाद दी और फरमाया– ''तुम वलीमा करो। चाहे एक बकरी ही जिब्हे करो।'' (बुखारी–3780–3781) (यह उस वक्त का वाकिया है जब मुसलमान–मुसलमान का हमदर्द था और अपनी ज़रुरत से ज़ाइद चीज़ अपने भाई को दे दिया करता था। जबकि आज किसी को दूसरे की फिक्र कम ही है। हर शख्स अपने और अपने बीवी–बच्चों के बारे में ही सोचता है। जरुरत से जाइद चीज़ चाहे पड़े–पड़े खराब ही हो जाए लेकिन ज़रुरतमन्द मुसलमान को नही दी जाती।) इब्ने उमर रज़ि. का बयान है कि एक सहाबी के घर बकरे की सिरी बतौर हदया पेश की गई तो उसने कहा कि मेरा फलां भाई और उसके बच्चे मुझसे ज़्यादा ज़रुरतमन्द हैं। इसलिए वह सिरी उसने उसके यहां भेज दी। जब सिरी दूसरे सहाबी के यहां पहुँची तो उसने भी यही बात कही जो पहले ने कही थी। और सिरी को तीसरे के यहां भेज दिया। इस तरह यह सिर सात घरों से होता हुआ फिर पहले सहाबी के

यहां पहुँच गया।'' (मुस्तदरक हाकिम–सही) (इब्ने उमर रज़ि. ही का बयान है कि एक वक्त था जब कोई शख्स अपने मुसलमान भाई पर दीनार या दिरहम को तरजीह ना देता था। जबकि आज हमें मुसलमान भाई के मुकाबले दीनार व दिरहम ज़्यादा प्यारे हैं।)

(3) मुस्कुराकर मिलना– एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान से खन्दापैशानी और मुस्कुराते चेहरे के साथ मिलना चाहिये। इसलिए के अबुजर रज़ि. से रसूल सल्ल. ने फरमाया था ''तुम नेकी के किसी काम को छोटा मत समझो। अगर चे तुम अपने भाई से मुस्कुराते चेहरे के साथ ही मुलाकात करो।'' (मुस्लिम–2626)

मुस्लिम भाई से मुस्कराहट के साथ मिलना भी सदका है। जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फरमाया ''तुम्हारा अपने भाई से मुस्कुरा कर मिलना सदका है। नेकी का हुक्म देना और बुराई से रोकना सदका है। रास्ता भूले हुए को सही रास्ता बतलाना सदका है। रास्ते पर पड़े हुए पत्थर, कांटे और हड्डी को हटाना तुम्हारे लिए सदका है और अपने डौल से भाई के डौल में पानी डालना तुम्हारे लिए सदका है।'' (तिर्मिजी 1956 –सही) नबी सल्ल. का यह भी इर्शाद है '' जो दो मुसलमान मुलाकात के वक्त एक–दुसरे का हाथ पकड़ते (मुसाफहा करते) है। अल्लाह पर उनका हक है कि वह उनकी दुआ को कुबूल करे और उनके हाथ अलग–अलग होने से पहले उनकी मग़फिरत फ़रमा दें।'' (मुसनद अहमद –सही)

(4) आपस में अच्छी बातचीत करना – इर्शादे बारी तआला है ''लोगों से अच्छी बातें कहा करो।'' (बक़रा – आयत – 83) और ''मेरे बन्दों से कह दो कि (लोगों से) ऐसी बातें कहा करे जो बहुत पसन्दीदा हो क्योंकि शैतान (बुरी बातों से) उनमें बिगाड़ करवा देता है। कुछ शक नही कि शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है।'' (इस्रा – आयत–53) अच्छी और पाकीज़ा गुफ्तगु करना भी सदका है। जैसा कि नबी सल्ल. ने फरमाया ''पाकीजा कलमा (बात) सदका है।'' (बुखारी –2989 मुस्लिम 1009) और ''तीन चीजों से तुम्हें अपने भाई की सच्ची मुहब्बत नसीब होगी। (1) जब भी मिलों तो उसे सलाम कहो। (2) वह आए तो मजलिस में बैठने की उसे जगह दो और (3) तुम उसे उस नाम से पुकारो जो उसे सबसे ज्यादा प्यारा हो।'' (मुस्तदरक हाकिम – ज़ईफ–अलबानी 2582)

(5) आपस में रहम दिली और नरमी – मुसलमानों को आपस में एक–दूसरे के लिए रहमदिल होना चाहिए। नरमी का बर्ताव करना चाहिये। आएशा रजि. से नबी सल्ल. ने फरमाया था ''बेशक ! अल्लाह तआला नरम है और नर्मी को पसन्द करता है। नरमी (करने) पर वह चीज अता करता है जो सख्ती वग़ैरह पर अता नही करता।'' (मुस्लिम –2593) नबी सल्ल. ने यह भी फरमाया कि ''जो शख्स आसान, नरमदिल और (मुसलमानो से) करीब हो। उस पर अल्लाह ने जहन्नम को हराम कर दिया है।'' (सही तर्गीब व तरहीब –1745) खरीद–ओ–फ़रोख्त और लेन–देन के मामलात में आसानी पैदा करने वाले और नर्म रवैया इख्तियार करने वाले के लिए दुआ करते हुए आप सल्ल. ने फ़रमाया ''अल्लाह उस शख्स पर रहम फरमाए जो खरीद व फरोख्त के वक्त आसान हो और (अपने कर्ज का) तकाजा करते वक्त दरगुजर करने वाला हो।'' (बुखारी –2076) और यह कि '' तुम से पहले अल्लाह तआला ने एक शख्स को सिर्फ इसलिए बख्श दिया कि वह लेन–देन में और (अपने हुकूक का) मतालेबा करने में निहायत आसान था।'' (तिर्मिजी) और नसाई की रिवायत में है कि ''अल्लाह ने उसे जन्नत में दाखिल कर दिया।'' (सही तर्गीब व तरहीब –1742–1743) ''बेशक ! अल्लाह ने मेरी तरफ वहय की है कि तुम तवाज़ौ (आजिजी) इख्तियार करो। यहां तक कि कोई शख्स किसी पर फख्र न करे और न ही किसी पर जुल्म करे।'' (अबु दाऊद 4895–सही) ''सदका करने से माल में कमी नही आती। दरगुजर करने से अल्लाह तआला बन्दे की इज्जत बढ़ाता है और आजिज़ी इख्तियार करने से अल्लाह उसे जरूर बुलन्दी अता करता है।'' (मुस्लिम –2588)

(6) बीमार की अयादत करना :– नबी सल्ल. का इर्शाद है –''जो शख्स मरीज

की अयादत करे तो आसमान से एक ऐलान करने वाला कहता है तुम्हें खुशहाली नसीब हो। तुम्हारा चलना बहुत अच्छा है और तुमने जन्नत में एक घर बना लिया है।" (इब्ने माजा–1443–हसन) और " जब कोई अपने भाई की अयादत या जियारत करे तो अल्लाह उससे फरमाता है – तुम अच्छे हो और तुम्हारा चलना भी अच्छा है। तुमने जन्नत में घर बना लिया है।" (अदब अल मुफरद–345–हसन–अलबानी) और "एक मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की अयादत के लिए जाता है तो वह वापिस लौटने तक जन्नत के मेवों में रहता है।"(मुस्लिम –2568) इतना ही नहीं "कोई मुसलमान जब सुबह के वक्त किसी मुसलमान भाई की अयादत करे तो शाम तक सत्तर हजार फरिश्तें उसके लिए दुआएं मग़फिरत करते है और अगर वह शाम के वक्त अयादत को जाए तो सुबह होने तक सत्तर हजार फरिश्ते उसके लिए मग़फिरत की दुआ करते है और जन्नत में उसके लिए एक बाग होगा।" (तिर्मिजी 850–सही–अलबानी) और यह भी कि "बेशक ! अल्लाह तआला कयामत के दिन फरमाएगा –ऐ आदम के बेटे ! मैं बीमार हुआ तो तुने मेरी अयादत भी न की ? वह कहेगा–ऐ मेरे रब ! मैं आपकी अयादत कैसे करता ? जबकि आप तो रब्बुल आलामीन है। अल्लाह फरमाएगा –क्या तुझे मालूम न था कि मेरा फ़ला बन्दा मरीज है। फिर तूने उसकी अयादत न की। क्या तुझे इल्म न था कि अगर तू उसकी अयादत करता तो मुझे भी वही पाता ?" (मुस्लिम–2569)

(7) खैर ख़्वाही करना :– जरीर बिन अब्दुल्लाह रजि. का बयान है कि मैनें अल्लाह के रसूल सल्ल. से बैअत की कि नमाज हमेशा पढ़ता रहूंगा, जकात देता रहूंगा और हर मुसलमान के साथ खैर ख्वाही का बर्ताव करूंगा।" (बुखारी–1401, मुस्लिम–56) खैर ख्वाही का तकाजा है कि अपने भाई के लिए हर वह चीज पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है। नबी सल्ल. का इर्शाद है – "तुम मे से कोई शख्स (कामिल) ईमान वाला नही हो सकता। जब क कि वह अपने (मुसलमान) भाई के लिए भी वही चीज पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है।" (बुखारी–013, मुस्लिम –58)

(8) तआवुन करना :– मुसलमान का मुसलमान पर हक है कि भलाई के कामों मे एक दुसरे की मदद करे। अगर परेशान हो तो उसका साथ दे और अपनी ताकत भर उसकी मदद करे। इर्शादे बारी तआला है "तुम नेकी और तक्वे की बुनियाद पर एक–दुसरे का तआवुन करो और गुनाह व ज्यादती पर एक–दुसरे की मदद न करो।" (माईदा–आयत–02) और रसूल सल्ल. का फरमान है – "एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए दीवार की तरह है जिसकी एक ईंट दूसरी ईंट को मजबूत बनाती है।" (बुखारी –481, मुस्लिम–2585) लिहाजा हर मुसलमान को दूसरे मुसलमान की जाइज कामों में मदद करना चाहिये और जरूरत और मुसीबत के वक्त उसे अकेला न छोड़ना चाहिये। यूं भी जो शख्स अपने भाई की मदद करता है अल्लाह उसकी मदद करता है। नबी सल्ल. का इर्शाद है कि "जो शख्स किसी मोमिन की दुनियावी परेशानियों में से एक परेशानी को खत्म करे अल्लाह उसकी उखरवी परेशानियों में से एक परेशानी को खत्म कर देगा। जो शख्स किसी तंगदस्त (गरीब) पर आसानी करे। अल्लाह उसके लिए दुनिया व आखिरत में आसानी करेगा। जो किसी मुसलमान की पर्दापोशी (गुनाह छिपाये) करे। अल्लाह दुनिया व आखिरत में उसकी पर्दापोशी करेगा और अल्लाह उस वक्त तक बन्दे की मदद करता है जब तक वह अपने भाई की मदद करता रहता है।"(मुस्लिम –2699) और "बेवा और मिस्कीन के लिए कोशिश करने वाला ऐसा है जैसे अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला या जैसे रात को कयाम करने (तहज्जुद पढ़ने) और दिन को रोजा रखने वाला हो।"

(9) मज़लूमों की मदद करना :– इर्शादे बारी तआला है "अगर वह तुम से दीन के बारे में मदद तलब करें तो उनकी मदद जरूर करो।" (अनफाल–आयत–72) इसलिए भी कि "मुसलमान मुसलमान का भाई है। वह न उस पर जुल्म करता है और न ही उसे जालिमों के सुपुर्द करता है। जो शख्स अपने भाई की जरूरत को पूरा करने में लगा रहता है अल्लाह उसकी जरूरतें पूरी करता रहता है।"(बुखारी–2442, मुस्लिम–2580) और यह कि "अपने भाई की मदद करते रहा करों चाहे वह ज़ालिम हो या मज़लूम।" सहाबा रजि. ने अर्ज़ किया मजलूम की मदद करना तो ठीक है लेकिन

जालिम की मदद कैसे करें ? आप सल्ल. ने फरमाया "उसे जुल्म करने से रोकना उसकी मदद करना है।" (बुखारी –2444, तिर्मिजी–2255)

(10) मुस्तहिक लोगों की सिफारिश करना :– कोई मुसलमान जब अपने किसी जाइज काम के लिए सिफारिश का मोहताज हो तो ऐसा शख्स उसकी सिफारिश जरूर करे जो इसकी ताकत रखता हो। अल्लाह तआला का फरमान है "जो शख्स नेक बात की सिफारिश करे तो उसको उस (के सवाब) में से हिस्सा मिलेगा और जो बुरी बात (या गुनाह) की सिफारिश करे तो उसको उस (के अज़ाब) मे से हिस्सा मिलेगा।"(निसा–आयत–85) अबु मूसा अशअरी रजि. का बयान है कि रसूल सल्ल. के पास जब कोई साइल आता या आपसे कोई काम तलब किया जाता तो आप सल्ल. फरमातें "सिफ़ारिश करो ! तुम्हें भी अज्र मिलेगा।" (बुखारी–1432, मुस्लिम–2627) खासतौर पर जब लोग अपनी जाती गरज और मकसद के लिए नाजाइज़ सिफारिश करते हों और हकदारों का हक छीन कर गै़र मुस्तहिक़ लोगों को दिलवाते हो। हकदार को बग़ैर सिफारिश के हक मिलना मुश्किल हो तो ऐसे में उसका हक दिलवाने के लिए उसके हक में सिफारिश करना जरूरी है।

(11) मुसलमान के लिए ग़ायबाना दुआ करना :– नबी सल्ल. का इर्शाद है "कोई मुसलमान जब अपने किसी मुसलमान भाई के लिए उसकी गै़र मौजूदगी में दुआ करे तो फरिश्ता कहता है तेरे लिए भी वही चीज़ हो जो तू अपने भाई के लिए मांग रहा है।" (मुस्लिम–2732) एक और रिवायत में है कि "मुसलमान की अपने भाई के लिए ग़ायबान दुआ कुबूल की जाती है। वह जब भी उसके लिए खैर की दुआ करता है तो उसके सर के पास एक फ़रिश्ता जिसकी उसके साथ–साथ रहने की डयूटी होती है वह हर दफ़ा उसकी दुआ पर आमीन कहता है और उसके लिए दुआ करता है कि तुझे भी वही चीज़ नसीब हो।"(मुस्लिम–2733)

मुसलमान पर मुसलमान का हक :–

नबी सल्ल. ने फरमाया "मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक है।
(1) सलाम का जवाब देना। (2) मरीज की अयादत करना। (3) फ़ौतशुदा की नमाजे़ जनाजा पढ़ना (और दफ़्न तक उसके साथ रहना)। (4) दावत कुबूल करना और (5) छीकने वाला (जब अल्हम्दु लिल्लाह कहे) तो उसको यरहमुकल्लाह कहना।"(बुखारी–1240, मुस्लिम–2162) जबकि एक रिवायत में 6 हुकूक का जिक्र है (1) यह कि जब वह मुसलमान से मिले तो उसे सलाम करे (2) जब कोई मुसलमान किसी से नसीहत तलब करे तो वह उसे नसीहत करे।" बाकी चार हुकूक वही है जो पिछली हदीस में ज़िक्र किये गये है।(मुस्लिम–2162)

मुसलमानों की ख़िदमत करना अज़ीम अमल है :–

नबी सल्ल. ने फरमाया "लोगों में से अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा प्यारा वह है जो उनमें सबसे ज्यादा नफ़ा पहुंचाने वाला हो। आमाल में से अल्लाह को सबसे ज्यादा प्यारा अमल वह खुशी है जो आप किसी मुसलमान को पहुंचाए या उसकी किसी परेशानी को दूर कर दें या उसकी तरफ से कर्ज़ अदा करे दें या (खाना खिलाकर) उसकी भूख खत्म कर दें। मुसलमान भाई के किसी काम के लिए उसके साथ चलना मुझे मस्जिद में एक महीना एतेकाफ़ बैठने से ज्यादा पसन्द है। जो आदमी अपने गुस्से पर काबू पा लें। अल्लाह उसके ऐब पर पर्दा डाल देता है और जो आदमी गुस्से का पी जाए हालांकि अगर वह चाहता तो उसका इजहार भी कर सकता था तो अल्लाह कयामत के दिन उसके दिल को खुशी से भर देगा। जो शख्स किसी काम के लिए अपने (मुसलमान) भाई का साथ दे यहां तक कि वह काम पूरा हो जाए तो अल्लाह उसे उस दिन साबित कदम रखेगा जब लोगों के कदम फिसल रहे होगें। और बद अखलाकी अमल को इस तरह खराब करती है जैसे सिरका शहद को खराब कर देता है।"(सही–जामेअ अलबानी–176)

आपसी ताअल्लुकात में बिगाड़ की वजह :–

वह बातें जिन की वजह से भाईचारे की फ़िज़ा नफरत और दुश्मनी में बदल जाती है। मुख्तसरन यह है :–

(1) ग़ीबत :– "तुम में से कोई किसी की गीबत न करे। क्या तुम में से किसी को यह बात पसंद है कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए ? पस तुम इसे नापसन्द करोगें।"(हुजरात–आयत–12) और "जो शख्स अपने भाई की इज्जत का ग़ायबाना बचाव करे तो अल्लाह पर उसका हक यह है कि उसे जहन्नम से आजाद कर दे।"(सही जामेअ अलबानी–6240)

(2) चुगलखोरी :– नबी सल्ल. का गुजर दो कब्रों के पास से हुआ तो आपने फरमाया "इन दोनों को अज़ाब दिया जा रहा है। इस वजह से कि इनमें से एक चुगलखोरी किया करता था और दूसरा अपने पेशाब के छीटों से नही बचता था।" (बुखारी–1378, मुस्लिम–466) बल्कि यहां तक फरमाया "चुगली खाने वाला जन्नत में दाखिल न होगा।"(बुखारी–6056, मुस्लिम–146)

(3) बदगुमानी करना और टोह में रहना :– इर्शादे बारी तआला है "ऐ ईमान वालो ! तुम ज्यादा गुमान करने से बचों क्योंकि कुछ गुमान गुनाह है और आपस में जासूसी न किया करो।"(हुजरात–आयात–12) फरमानें रसूल सल्ल. है "तुम बदगुमानी करने से बचों क्योंकि यह सबसे झूठी बात है और तुम चोरी–छिपे किसी की बात न सुना करों और न ही एक दूसरे के ऐब तलाश किया करो।"(बुखारी–6066, मुस्लिम–2563)

(4) मज़ाक उड़ाना या नाम बिगड़ाना :– इशार्दे बारी तआला है "ऐ ईमान वालो ! कोई कौम किसी कौम का मजाक न उडाए। मुमकिन है कि वोह लोग उनसे बेहतर हों और न औरतें –औरतौं का (मजाक उड़ाए) मुमकिन है कि वोह उनसे अच्छी हो। आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओं और न एक–दूसरे को बुरा नाम दो।"(हुजरात–आयत–11) और आप सल्ल. का फरमान है "किसी आदमी के बुरा होने के लिए यही काफी है कि वह अपने भाई को हकीर (तुच्छ) समझे।"(तिर्मिजी–1927–सही अलबानी)

(5) बुग़ज और हसद :– नबी सल्ल. ने फरमाया "न तुम एक दूसरे से बुग़ज रखो और न आपस में हसद करो। न जासूसी किया करो और न ही चोरी–छिपे किसी की बात चीत सुना करो। किसी चीज की कीमत बढ़ाने के लिए बोली मत लगाया करो और तुम सब भाई–भाई बन कर रहो।"(मुस्लिम–2563) और फरमाया "तुम में पहली उम्मतों की बीमारी चल निकली है और वह हसद और बुग़ज है। यह बीमारी ऐसी है जो बिल्कुल सफाया कर देती है, बालों का नही बल्कि दीन का। अल्लाह की कसम ! तुम जन्नत में दाखिल नही होगें जब तक कि ईमान न ले आओं और तुम ईमान वाले नही हो सकते जब तक आपस में मुहब्बत न करने लगो। तुम आपस में सलाम को आम करो।"(तिर्मिजी–2510 हसन)

(6) आपस में बोल–चाल बन्द कर देना :– आप सल्ल. ने फरमाया "न तुम एक–दूसरे से बुगज रखो और न आपस में हसद करो। न ही एक दूसरे से पीठ करो। तुम सब अल्लाह के बन्दे और भाई–भाई बन कर रहो। किसी मुसलमान के लिए यह जाइज़ नही कि वह अपने भाई को तीन दिन से ज्यादा छोड़े रखे।" (यानि न उससे सलाम करे न बातचीत करे) (बुखारी–6065, मुस्लिम–2559) "इन दोनों में से बेहतर वह है जो सलाम करने में पहल करे।"(बुखारी–6077, मुस्लिम–2560) "हर पीर और जुमेरात को जन्नत के दरवाजें खोले जाते है। फिर हर उस शख्स को बख्श दिया जाता है जो अल्लाह के साथ शिर्क नही करता। सिवाएं उस आदमी के जो अपने (मुसलमान) भाई से बुगज और दुश्मनी रखता हो। इन दोनों के बारे में तीन बार कहा जाता है कि इन को मोहलत दे दो। यहां तक कि यह सुलह कर लें।" (मुस्लिम–2565, मौत्ता मालिक–2275)

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हम सभी को सच्चा–पक्का मुसलमान बनाऐं। हमें एक–दुसरे के हुकूक अदा करने और आपस में मुहब्बत रखने की तौफीक अता फरमाऐ। हमारे छोटे–बड़े सभी गुनाहों को माफ फ़रमा दें। आमीन या रब्बल आलमीन

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

Email: saeed.tonk@gmail.com

मो.09887239649, 09214836639